

एक नेता के रूप में जब आप अपनी सेवकाई की योजना बना रहे होते हैं, तो आपको एक अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्धांत को समझना और लागू करना होता है—कि परमेश्वर मौसमों के माध्यम से कार्य करता है।

और *Pillars* में “रणनीतिक मौसम” एक महत्वपूर्ण विषय है ताकि हम प्रभु की अगुवाई का अनुसरण कर सकें।

अंततः वही हमारी सेवकाई को संचालित कर रहा है।

हम उसकी योजना का अनुसरण कर रहे हैं, और परमेश्वर मौसमों के अनुसार कार्य करता है।

हम इसे प्रकृति में देखते हैं—जहाँ मौसम बदलते रहते हैं।

हम इसे अपने जीवन में भी देखते हैं—जहाँ हम विकास के विभिन्न चरणों से गुजरते हैं।

यह सिद्धांत सेवकाई में भी लागू होता है।

परमेश्वर केवल रेखीय (linear) रूप से कार्य नहीं करता।

वह मौसमों के अनुसार कार्य करता है।

और हमें यह समझना होगा कि मौसमों को कैसे पहचाना जाए और कैसे रणनीतिक रूप से उनकी योजना बनाई जाए।

बाइबल में एक पद है जो परमेश्वर के मौसमों की अवधारणा को दर्शाता है।

यह सभोपदेशक 3:1 में पाया जाता है: “हर बात का एक समय होता है, और आकाश के नीचे हर कार्य का एक अवसर।” और फिर वह कुछ मौसमों का वर्णन करता है:

- जन्म लेने का समय और मरने का समय
- बोने का समय और उखाड़ने का समय
- मारने का समय और चंगा करने का समय
- गिराने का समय और बनाने का समय

सेवकाई में कभी-कभी आप गिराने के मौसम में होते हैं।

कभी-कभी आप निर्माण के मौसम में होते हैं।

और आपको यह सुनिश्चित करना होता है कि आप परमेश्वर के मौसम का अनुसरण कर रहे हैं।

- रोने का समय और हँसने का समय

सेवकाई कभी-कभी कठिन और चुनौतीपूर्ण होती है, और कभी-कभी उत्साहपूर्ण और आनंददायक।

- शोक मनाने का समय और नृत्य करने का समय
 - पत्थर बिखरने का समय और उन्हें इकट्ठा करने का समय
 - दृष्टिकोण को फैलाने का समय और उसे समेटने का समय।
 - गले लगाने का समय और गले न लगाने का समय
- सेवकाई में रिश्ते भी मौसमों के अनुसार बदलते हैं।

- खोजने का समय और छोड़ देने का समय

आपको यह जानना होता है कि कब कुछ कार्यों को छोड़ देना चाहिए—क्योंकि मौसम ऐसा कह रहा है।

- रखने का समय और फेंकने का समय
- फाड़ने का समय और जोड़ने का समय
- मौन रहने का समय और बोलने का समय

ऐसे मौसम होते हैं जहाँ आप क्या कहते हैं, कैसे कहते हैं, या कुछ न कहना—यह सब परमेश्वर की योजना के अनुसार आपको सही स्थान पर रखता है।

- प्रेम करने का समय और घृणा करने का समय
- युद्ध का समय और शांति का समय

जब आप सभोपदेशक के इस अध्याय को पढ़ते हैं,
तो आप पाते हैं कि हम अक्सर मौसमों को सही ढंग से नहीं देखते।

हम जिस मौसम में हैं, उसे “अच्छा” या “बुरा” कह देते हैं।

लेकिन इस अध्याय में परमेश्वर मौसमों को इस तरह नहीं दर्शाते।
वह हमें यह नहीं चाहते कि हम मौसमों को रणनीतिक रूप से “अच्छा” या “बुरा” कहें।

हम मौसमों को “अच्छा” या “बुरा” इस आधार पर कहते हैं कि फल कितना आया, धन कितना आया, लोग कितने जुड़े।

जब चीजें आसान और भरपूर होती हैं, तो हम कहते हैं “अच्छा।”
जब चीजें कठिन और सीमित होती हैं, तो हम कहते हैं “बुरा।”

लेकिन परमेश्वर ऐसा नहीं करते।

वह विभिन्न विरोधाभासों को दिखाते हैं—यह कहते हुए कि कुछ मौसम कठिन होंगे।
कुछ मौसम चुनौतीपूर्ण होंगे।
लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि वे कम मूल्यवान हैं।

हर मौसम अच्छा है क्योंकि परमेश्वर अच्छे हैं।

कुछ मौसम कठिन होते हैं, लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि वे बुरे हैं।

जब आप अपनी सेवकाई और अपने जीवन को देखते हैं,
तो आपको मौसमों के अनुसार देखना चाहिए।

अब अगर हम ईमानदारी से कहें,

तो हम में से कई कहेंगे—“मुझे मौसम पसंद नहीं हैं।”

क्योंकि मौसम वह तरीका है जिससे परमेश्वर हमें मार्गदर्शन देते हैं, नियंत्रित करते हैं, और दिशा देते हैं।

लेकिन हम नियंत्रण करना चाहते हैं।

हम सेवकाई में समय को नियंत्रित करना चाहते हैं।

हम कहते हैं, “मैं निर्माण करना चाहता हूँ और इस महीने करना चाहता हूँ।”

और परमेश्वर कहते हैं, “नहीं, अभी निर्माण का मौसम नहीं है। अभी नींव रखने का मौसम है।”

जब आप नियंत्रण करना चाहते हैं,

तो आप मौसमों के बारे में रणनीतिक सोच को दरकिनार कर देते हैं।

आपको एक विश्वास और भरोसे का हृदय विकसित करना होगा—“परमेश्वर, आप प्रभारी हैं।”

अधीरता मौसमों को कठिन बना देती है।

क्योंकि हम हमेशा उस मौसम को चाहते हैं जहाँ फल आ रहा हो।

कोई भी “सर्दी” का मौसम पसंद नहीं करता।

कोई भी “बोने” का मौसम पसंद नहीं करता—जहाँ किसान को महीनों तक फल की प्रतीक्षा करनी होती है।

लेकिन परमेश्वर मौसमों के अनुसार कार्य करते हैं।

और जब हमारे पास विवेक नहीं होता,

तो हम मौसमों को पहचान नहीं पाते,

और फिर उस मौसम में नेतृत्व नहीं कर पाते जहाँ सबसे अच्छा फल आ सकता है।

कभी-कभी समस्या यह नहीं होती कि हमें मौसम पसंद नहीं हैं—

बल्कि यह होती है कि हमने अपनी सेवकाई और परिस्थितियों को मौसमों के अनुसार देखा ही नहीं।

इसलिए हम मौसमों के प्रति अनजान रहते हैं।

हो सकता है आपकी सेवकाई में एक समय ऐसा हो जब संघर्ष चल रहा हो।

यह एक मौसम है।

और जब आप पहचानते हैं—“ओह, यहाँ संघर्ष हो रहा है,”

चाहे वह समुदाय में हो या टीम में—

तो आप पूछ सकते हैं, “परमेश्वर इस मौसम का उपयोग कैसे करेंगे ताकि हम आगे बढ़ सकें?”

संघर्ष हमेशा बुरा नहीं होता।

संघर्ष बहुत अच्छा हो सकता है—अगर हर कोई एक ही अंतिम लक्ष्य और सेवकाई की दृष्टि पर केंद्रित हो।

कुछ मौसम ऐसे होते हैं जो अलग-अलग तरीकों से वर्णित होते हैं।

और जब आप जानते हैं कि वह मौसम क्या है,

तो आप उसे एक फिल्टर की तरह उपयोग करते हैं—जिससे आप परिस्थितियों को देखते हैं।

लेकिन अगर आपके पास वह मौसमों का फिल्टर नहीं है,

तो आप केवल परिस्थितियों को “अच्छा” या “बुरा” कहेंगे।

और अगर वे “बुरी” लगती हैं,

तो आप सोचेंगे—“हम इसे जल्दी से अच्छा कैसे बनाएँ?” और आप खुद को नियंत्रण में लेते हुए पाएँगे।

इसलिए सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि हम रणनीतिक रूप से मौसमों की योजना बनाने से पहले यह समझें कि परमेश्वर मौसमों का उपयोग क्यों करते हैं।

क्योंकि वह चाहते हैं कि हम उनका अनुसरण करें।

वह चाहते हैं कि हम हर मौसम में गहराई में जाएँ।

आप जानते हैं, हम जो दौड़ दौड़ रहे हैं—एक नेता के रूप में, एक सेवकाई के अगुवा के रूप में—उसका कोई अंतिम लक्ष्य नहीं है।

हम यह दौड़ तब तक दौड़ते रहेंगे जब तक प्रभु लौट नहीं आते या जब तक वह हमें अपने पास नहीं बुला लेते।

और अक्सर जब हम मौसमों के अनुसार नहीं सोचते,

तो हम हमेशा एक अंतिम लक्ष्य के बारे में सोचते हैं—

“अगर मैं बस इस स्थान तक पहुँच जाऊँ, इतने लोगों तक पहुँच जाऊँ, बजट इतना हो जाए...”

लेकिन हमें कहना चाहिए:

“नहीं। हम किस मौसम में हैं?”

“और हम इस मौसम को कैसे पूरी तरह उपयोग कर सकते हैं?”

पुराने नियम में एक अद्भुत पद है जहाँ परमेश्वर इस्राएल की एक जाति का वर्णन करते हैं।

वह कहते हैं:

“इस्साकार के लोग समय को पहचानते थे और जानते थे कि क्या करना है।”

यह पद मुझे हमेशा प्रभावित करता है।

एक ऐसा नेता बनना जो समय को पहचानता है,

जानता है कि परमेश्वर उस समय में कार्य कर रहे हैं,

और जानता है कि उस समय में मुझे क्या करना है—

ताकि उस मौसम का पूरा लाभ उठा सकूँ जो परमेश्वर ने दिया है।

आत्मिक रूप से, ऐसे मौसम होते हैं जिन्हें हमें व्यक्तिगत रूप से एक नेता के रूप में पहचानना होता है।

• एक जंगल का मौसम होता है—जहाँ आपको लगता है कि हर बार जब आप बाइबल खोलते हैं, तो कुछ विशेष नहीं मिल रहा।

यह भी एक मौसम है।

उस मौसम में परमेश्वर आपको क्या करने के लिए बुला रहे हैं?

- ऐसे मौसम होते हैं जब आप परमेश्वर के लिए अत्यधिक भूखे और प्यासे होते हैं।
लेकिन वह स्तर हमेशा नहीं रहेगा।
उस मौसम में आपको क्या करना चाहिए?
- एक संशय का मौसम हो सकता है—जहाँ परमेश्वर आपको गहरे विश्वास की ओर ले जा रहे हैं।

आप पूरे पवित्रशास्त्र में पढ़ते हैं, विशेष रूप से पुराने नियम की कहानियों में,
कि परमेश्वर के सेवकों—पुरुषों और स्त्रियों—ने विभिन्न प्रकार के मौसमों का अनुभव किया।

कभी भी उस चरण को जिसमें आप हैं, केवल “अच्छा” या “बुरा” कहकर मत देखिए।
यह मत कहिए कि “परमेश्वर यहाँ हैं या नहीं हैं,” या “मैं इससे कैसे बाहर निकलूँ?”
बल्कि यह समझिए कि व्यक्तिगत रूप से और अपनी सेवकाई के लिए—

मौसम वह समय है जब परमेश्वर भविष्य के लिए नींव रखते हैं,
जहाँ वह हमें उस कार्य की ओर ले जा रहे हैं जो वह करना चाहते हैं।

एक समय था जब मैं पास्टर था और वह एक सुसमाचार प्रचार के पुनरुत्थान का मौसम था।
हमने देखा कि बहुत से लोग मसीह के पास आ रहे थे।
हमारी कलीसिया की वेदी लोगों से भर जाती थी।
विशेष रातें और सभाएँ होती थीं, और बहुत से लोग उद्धार पा रहे थे।

मैं जानता था कि यह एक विशेष मौसम है—और यह हमेशा नहीं रहेगा।

लेकिन उस मौसम में हमें बहुत जानबूझकर और उद्देश्यपूर्ण होना था।
मेरे एक नेता ने मुझसे कहा, “इतने सारे लोग उद्धार पा रहे हैं, हमें एक बाइबल स्कूल शुरू करना चाहिए।”
लेकिन बाइबल स्कूल उस सुसमाचार प्रचार के मौसम में उपयुक्त नहीं था।

हमें उस मौसम में जीना था जो परमेश्वर हमें दे रहे थे।
हमें यह समझना था कि एक दिन यह मौसम समाप्त होगा।
बेशक, लोग उद्धार पाते रहेंगे,
लेकिन इस स्तर की तीव्रता नहीं रहेगी।

मुझे नेतृत्व को तैयार करना था।
हम क्या कर रहे थे?
हम उस मौसम को रणनीतिक रूप से देख रहे थे जिसमें परमेश्वर ने हमें रखा था,
और यह पहचान रहे थे कि हमें इस मौसम में कैसे नेतृत्व करना है।

यहीं पर “रणनीतिक मौसमीय योजना” हमारे लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है।

यहाँ कुछ विचार हैं जिन पर आप ध्यान दे सकते हैं जब आप मौसम के आधार पर रणनीतिक योजना बनाना शुरू करते हैं—

ना कि केवल रेखीय सोच के आधार पर:

1. मौसम के प्रति जागरूक बनें।

आप यह कैसे करते हैं?

वर्णन करें।

- अपनी सेवकाई में शामिल लोगों का वर्णन करें।
- अपनी टीम का वर्णन करें।
- वर्तमान स्थिति का वर्णन करें।
- फल की मात्रा या फल की कमी का वर्णन करें।

मौसम के प्रति जागरूक होना किसी परिवर्तन को लाना नहीं है।

यह केवल उस मौसम को पहचानना है।

सच्चाई से वर्णन करना कि परमेश्वर क्या कर रहे हैं।

आप इसे प्रश्नों के माध्यम से वर्णित कर सकते हैं।

आप इसे परिणामों के माध्यम से वर्णित कर सकते हैं।

उदाहरण के लिए, आप यह वर्णन कर सकते हैं कि लोग विश्वास की स्थिति में कहाँ हैं। आप यह जान सकते हैं कि लोग उस विश्वास की स्थिति में नहीं हैं जहाँ वे उस दृष्टि की ओर आगे बढ़ सकें जो आप उन्हें देना चाहते हैं।

और आपको एक मौसम के लिए उनका विश्वास बनाना होगा।

तब आप उस दृष्टि की ओर आगे बढ़ सकते हैं।

अक्सर नेता बड़ी दृष्टि और रणनीतिक निर्णय ले लेते हैं,

लेकिन उन्होंने यह नहीं पहचाना होता कि लोग विश्वास की किस अवस्था में हैं।

इसलिए सबसे पहले आपको बस मौसम के प्रति जागरूक होना है और उसका वर्णन करना है।

फिर आप यह कर सकते हैं कि उस मौसम में परमेश्वर की योजना को पहचानें।

जिस क्षण में आप हैं,

पौलुस ने इफिसियों की कलीसिया से कहा:

“हर अवसर का पूरा लाभ उठाओ।”

तो आप इस अवसर का पूरा लाभ उठाते हैं।

इस मौसम में सेवकाई का लक्ष्य क्या है?

मेरा व्यक्तिगत लक्ष्य क्या है?

अब जब मुझे पता है कि यह कौन-सा मौसम है,
तो आत्मिक रूप से मैं यह पहचानने जा रहा हूँ कि परमेश्वर इस मौसम में क्या करना चाहते हैं।
और मैं उस कार्य में अपनी भूमिका को पहचानूँगा।

फिर तीसरा, और यह बहुत महत्वपूर्ण है—
आपको योजना बनानी होगी यह जानते हुए कि एक और मौसम आने वाला है।
एक अर्थ में, आपको न केवल वर्तमान मौसम में कार्य करना है,
बल्कि अगले मौसम के संक्रमण की योजना भी बनानी है।

इसलिए परिवर्तन सेवकाई की योजना का हिस्सा बनता है।

सेवकाई में नेताओं द्वारा की जाने वाली एक सामान्य गलती यह होती है कि
वे मौसम को पहचानना जानते हैं,
वे यह भी जानते हैं कि परमेश्वर उस मौसम में क्या कर रहे हैं,
लेकिन फिर वे खुद को उस मौसम में इस तरह स्थिर कर लेते हैं
कि जब वह मौसम समाप्त होता है,
तो वे अगले मौसम के लिए तैयार नहीं होते,
और उसी स्थान पर रुके रह जाते हैं।

अब बाइबल में एक उदाहरण है कि मौसमों के लिए रणनीतिक रूप से योजना कैसे बनाई जाए।
यह वास्तव में यीशु के साथ है।

यूहन्ना अध्याय 7 में,
यीशु को उसके कुछ मित्रों से रणनीतिक सलाह मिलती है।
वे कहते हैं:
“सुनो, यरूशलेम जाओ। अगर तुम्हें सेवकाई करनी है, तो यरूशलेम जाओ।
अपने चमत्कार वहाँ दिखाओ। पोस्टर लगाओ, संकेत दो।
हर कोई तुम्हारे पास आएगा। वे जान जाएँगे कि तुम ही मसीहा हो।”

और फिर यीशु उन्हें एक बहुत ही विशेष उत्तर देते हैं।
वह कहते हैं:
“तुम यरूशलेम जाओ, लेकिन मेरे लिए अभी समय सही नहीं है।”

आप जानते हैं वह क्या कह रहे हैं?

“यह मेरा मौसम नहीं है।”

समय मौसमों में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

जब आप मौसमों में रणनीतिक योजना बनाने के बारे में सोचते हैं,
और आप इस मॉडल को देखते हैं,
तो उसमें तीन घटक होते हैं:

1. मौसम – हम किस मौसम में हैं?
2. लक्ष्य – हमारा लक्ष्य क्या है?
3. योजना – वह योजना क्या है जो हमें उस लक्ष्य तक पहुँचने में मदद करेगी?

यीशु के लिए, उनका लक्ष्य था दुनिया का उद्धार,
क्रूस तक जाना।
उनका लक्ष्य केवल एक बड़ी सेवकाई नहीं था।
वह उनका परम उद्देश्य था।

उनका मौसम था—यरूशलेम जाने का समय अभी नहीं आया था।
इसलिए उनकी योजना थी:
“तुम जाओ, लेकिन मैं यहीं रहूँगा।”

जब आप यूहन्ना 7 को देखते हैं,
तो आपको यीशु का एक चित्र मिलता है—
जो मौसम के अनुसार रणनीतिक योजना बना रहे हैं,
और मौसम, लक्ष्य, और योजना के बीच एक संतुलन स्थापित कर रहे हैं।

अक्सर जब मैं कलीसियाओं के साथ कार्य करता हूँ,
तो मैं पाता हूँ कि वहाँ यह संतुलन नहीं है।

मैं एक देश में कलीसियाओं के एक नेटवर्क के साथ कार्य कर रहा था
जहाँ कलीसिया की स्थापना एक नई अवधारणा थी।

मैं कई पास्टर्स से मिला,
और मैंने यह पहचाना कि जिस मौसम में वे थे,
वे कलीसिया की स्थापना के लिए तैयार नहीं थे—
क्योंकि उन्हें वास्तव में यह समझ नहीं थी कि कलीसिया क्या है।

उनके पास धन था।
उनके पास लोग थे।
लेकिन संतुलन होना आवश्यक है।

सिर्फ यह कहना पर्याप्त नहीं है कि
“हमारे पास लक्ष्य है और हमारे पास योजना है।”

उस देश के पास्टर कह सकते थे:

“हमारा लक्ष्य है कलीसिया की स्थापना।

हमारे पास योजना है।

हमारे पास धन है।

हमारे पास लोग हैं।

हम इसे करेंगे।”

लेकिन मौसम ऐसा था जहाँ वे तैयार नहीं थे—

क्योंकि वे बाइबल के अनुसार स्वस्थ और पूर्ण रूप से कलीसिया की अवधारणा से परिचित नहीं थे।

और एक वर्ष तक मैंने उस कलीसियाई नेटवर्क के साथ कार्य किया,

उन्हें यह समझाने में मदद की कि:

- कलीसिया क्या है?
- कलीसिया की स्थापना क्या होती है?
- यह समुदाय में कैसे कार्य करती है? उस मौसम के दौरान वे बदल गए।

एक वर्ष बाद, उन्हें अब यह समझ आ गया था कि वास्तव में वह क्या है।

अब वहाँ एक संतुलन था।

पास्टर उस मौसम के लिए तैयार थे।

लक्ष्य था—कलीसियाओं की स्थापना करना।

योजना थी—हमारे पास धन है, हमारे पास लोग हैं, हम आगे बढ़ सकते हैं।

उनका लक्ष्य कभी गलत नहीं था।

कलीसियाओं की स्थापना करना हमेशा एक महान लक्ष्य था।

लेकिन उनके पास इन तीन क्षेत्रों का संतुलन नहीं था।

अब आप थोड़ा आत्म-मूल्यांकन करें।

अपनी सेवकाई को देखें और यीशु के यूहन्ना 7 मॉडल के बारे में सोचें:

- मौसम
- लक्ष्य
- योजना

अक्सर हम केवल लक्ष्य और योजना के बारे में सोचते हैं—और फिर आगे बढ़ जाते हैं।

लेकिन परमेश्वर कह रहे हैं:

“मौसम के बारे में रणनीतिक रूप से सोचो।

क्या इसके लिए समय सही है?”

और आप कह सकते हैं:

“मुझे यह सुनिश्चित करना है कि संतुलन है।

सिर्फ इसलिए कि मेरे पास एक लक्ष्य है,

सिर्फ इसलिए कि मेरे पास एक योजना है,

और मेरे पास उसे पूरा करने की क्षमता है—इसका मतलब यह नहीं कि मौसम उसके लिए सही है।”

ये तीनों हमेशा एक साथ जुड़े होने चाहिए।

कई बार लोग मुझे अपनी दृष्टि और आगे बढ़ने की योजना बताते हैं।

और सबसे पहला प्रश्न जो मैं पूछता हूँ वह यह है:

“आप किस मौसम में हैं?”

क्या वह मौसम उस कार्य के लिए बुला रहा है?

क्या वहाँ विश्वास का स्तर है?

क्या संसाधन उपलब्ध हैं?

क्या अवसर मौजूद है?

जब आप रणनीतिक रूप से सोचने लगते हैं,

तो आप वास्तव में परमेश्वर के समय में उसके कार्य का अनुसरण कर रहे होते हैं,

और आप उसकी बुद्धि का उपयोग कर रहे होते हैं।

जो बाइबल सिद्धांत हम सेवकाई में उपयोग करते हैं, वे हमारे परिवारों में भी लागू होते हैं।

मैं एक पिता हूँ।

जब मेरी पत्नी और मैं अपने बच्चों की परवरिश कर रहे थे,

तो हमने इस बाइबल मॉडल का उपयोग केवल सेवकाई के लिए नहीं,

बल्कि परिवार के लिए भी किया।

मेरे नौ वर्षीय बेटे का मौसम क्या है?

और उस मौसम में—जब वह नौ वर्ष का है—

हम किस प्रकार का लक्ष्य परमेश्वर से विश्वास में माँग सकते हैं कि वह उसके जीवन में क्या करना चाहता है?

और हमें माता-पिता के रूप में कौन-सी योजना बनानी चाहिए?

जब मेरा नौ वर्षीय बेटा बारह वर्ष का हो जाता है,
तो उसका मौसम बहुत अलग होता है।
वह अधिक परिपक्व हो गया है।
उसकी समझ अधिक स्पष्ट है।

उस मौसम में उसके विकास का लक्ष्य क्या है?
और हमारी योजना कैसे बदलती है?

यहाँ तक कि माता-पिता के रूप में बच्चों की परवरिश करते समय भी,
आप मौसमों के अनुसार सोचते हैं।

आप अपनी शादी में भी मौसमों के अनुसार सोचते हैं।
परमेश्वर ने हमें पति-पत्नी के रूप में किस मौसम में रखा है?

और उस मौसम में लक्ष्य क्या है?

तो हमारी भूमिका क्या है?
हमारी योजना क्या है?

हम रणनीतिक रूप से मौसमों के अनुसार सोच रहे हैं।

और जब आप ऐसा करते हैं,
तो आप एक और कार्य करते हैं—आप भविष्यवाणी करते हैं कि अगला मौसम कैसा होगा।

जब मेरी कलीसिया में सुसमाचार प्रचार का मौसम था,
तो मुझे पता था कि वह कुछ महीनों से अधिक नहीं चलेगा।
परमेश्वर ने मुझे यह बात स्पष्ट रूप से दिखाई थी।

मुझे पता था कि अगला मौसम गहन शिष्यत्व का होना चाहिए,
क्योंकि अगला मौसम बहुत सारे नए विश्वासियों का मौसम होगा।

अगर मेरी कलीसिया में बहुत सारे नए विश्वासी हैं,
तो लक्ष्य और योजना क्या होगी?

एक शिष्यत्व कार्यक्रम।

अब सुसमाचार प्रचार के मौसम के दौरान,

मैं शिष्यत्व कार्यक्रम में जल्दी नहीं जाना चाहता था—
क्योंकि वह उस मौसम में फिट नहीं बैठता था।

और मुझे पता था कि वह मौसम समाप्त होगा।

इसलिए एक नेता के रूप में मुझे यह भविष्यवाणी करनी थी:
“अगला मौसम क्या होगा?”

सभोपदेशक और यूहन्ना 7 हमें अद्भुत अंतर्दृष्टि देते हैं कि
परमेश्वर मौसमों के अनुसार नेतृत्व करते हैं।

वह यह व्यक्तिगत रूप से हमारे लिए करते हैं,
और वह यह सेवकाई में भी करते हैं।

हमें मौसम को पहचानना और समझना होगा।

हमें यह समझना होगा कि उस मौसम में लक्ष्य और योजना क्या है।

और हमें अगले मौसम के लिए भविष्यवाणी करनी होगी।

इस प्रकार हम हमेशा परमेश्वर की अगुवाई के अनुसार बदलते रहते हैं।

अब आप अपनी सेवकाई का आत्म-मूल्यांकन करें:

- आप समय को पहचानने में कितने सक्षम हैं?
- क्या उस मौसम, लक्ष्य और योजना के बीच संतुलन है जिसमें आप हैं?

जब यह संतुलन होता है,
तो आप परमेश्वर की सबसे बड़ी फलदायीता को देखेंगे—
जो आपको भविष्य के मौसमों के लिए तैयार कर रही होती है,
जैसे वह आपकी सेवकाई और जीवन में मार्गदर्शन करता है।